8

''मुझ में बने रहो''

(यूहन्ना 15)

''यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा। मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे। जैसे पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैं ने तुम से प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो। यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे: जैसे कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं। मैं ने ये बातें तुम से इसलिए कही हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए'' (आयतें 7-11)।

यीशु में बने रहने पर नये नियमों में से मुख्य वचनों में से एक यूहन्ना 15:7-11 है। यह हवाला क्रूस पर अपने चढ़ाए जाने से पहले गुरुवार की शाम अपने प्रेरितों के साथ हमारे प्रभु की बातचीत से सम्बन्धित है। आने वाले अन्धकारमय भविष्य के सम्बन्ध में उन्हें तसल्ली देते हुए उसने उन्हें उसमें बने रहने का आदेश दिया। ''उसमें'' वाक्यांश का संकेत उन शिक्षाओं के लिए था जो उसने उन्हें दी थी, अर्थात जीवन का वह दायरा जो उसने हमें दिया था, प्रेम का वह माहौल जो उन्हें उससे मिला था और वह सामर्थ जो उन्हें केवल वही दे सकता था।

यह प्रोत्साहन दाखलता और टहनियों के रूपक के बाद जिसका इस्तेमाल यीशु ने अभी भी किया था (15:1-5)। उसने अपने प्रेरितों से कहा था, ''तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम मैं: जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते'' (15:4)। कोई टहनी दाखलता से अलग होकर फल नहीं सकती और न ही प्रेरितों को यीशु से अलग होकर आत्मिक जीवन मिलता है। उसका पिता किसान अर्थात दाखलता का मालिक है। यीशु स्वयं दाखलता है और उसके प्रेरित और चेले टहनियां हैं। इस से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि पवित्र आत्मा हमारी अगुआई करता है कि हम टहनियां बन सकें।

यह हवाला इस प्रकार से आगे बढ़ता है, जिसमें यीशु प्रेरितों के लिए उसके वफ़ादार रहने के कारण गिना रहा था। एक अर्थ में उसने उन से कहा, ''तुम्हें किसी को, किसी परिस्थिति को, किसी त्रासदी को तुम्हें मुझ में बने रहने से रोकने न देने का कारण यह है। विरोध की लहरें चाहे कितनी भी खतरनाक क्यों न हों, मुझे थामे रखो और मुझ में बने रहो।'' उसमें बने रहने के लिए उन्हें दी गई उसकी प्रेरणाएं आज हमारे लिए भी हैं।

यीशु ने उन्हें क्या बताया था?

''प्रार्थना की आशीष का आनन्द लो''

''यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा'' (15:7)।

''मुझ में बने रहने वालों को प्रार्थना की आशीष मिलेगी।'' जो सचमुच में प्रार्थना करने वाला है वही यीशु में बना रहता है, क्योंकि असली प्रार्थना यीशु के नाम और अधिकार में और यीशु की सोच के अनुसार ही होती है।

प्रार्थना उन लोगों का विशेषाधिकार है, जो यीशु के साथ वाचा के सम्बन्ध में बने रहते हैं। मसीही लोगों के रूप में हम उसके वचनों में ''बने रहते'' या ''जीवित रहते'' हैं। उसके वचनों के लिए यह हमारा आज्ञापालन उस स्तर तक पहुंच जाता है जिसे हमारे अन्दर उसके वचनों में अनुमति देना कहा जा सकता है। जब हम सचमुच में आज्ञा मानते हैं, तो हम यीशु की शिक्षाओं के साथ एक हो जाते हैं। उसके वचन हमारे मनों को भर देते हैं ताकि हमारे विचार उसी की सोच से चलें।

यीशु ने अपनी सामर्थ, अधिकार और नाम उनको दिया, जो उसमें बने रहते हैं। उसने कहा, ''तुम जो चाहो, इच्छा करो या उसकी तुम्हें आवश्यकता हो, मैं तुम्हारे लिए पिता से ले लूंगा।'' उसमें बने रहने वालों को यीशु द्वारा इस प्रकार से सम्मान दिया जाता है क्योंकि वह उनके लिए जो उसकी इच्छा को लगातार पूरी करने की चाह करते हैं बेहतर करने की तलाश में रहता है। पिता के पास प्रार्थना इसी पृष्ठभूमि में फलती है।

''बहुत सा फल लाओ''

''मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे'' (15:8)।

''जो मुझ में बने रहते हैं वे बहुत सा फल ला सकते हैं।'' केवल यीशु के द्वारा ही हमें आत्मिक जीवन, ईश्वरीय बुद्धि और वह सच्ची समझ मिल सकती है जो एक सच्चे चेले के लिए फल लाने के लिए आवश्यक है।

''फल'' (*karpos*) शब्द परमेश्वर और मसीह की इच्छा को पूरी करते हुए एक चेले के पूर्ण और विजय जीवन को कहने का एक सामान्य शब्द है। वह वचन जो उसमें बना रहता है उसके जीवन और कार्यों और बातों में दिखाई देता है। जब लकड़ी को आग में डाला जाता है, तो आग जल्द ही लकड़ी में चली जाती है। लकड़ी जलती है और आग की ऊर्जा के साथ चमक पड़ती है। मसीह के चेले के साथ भी ऐसा ही होता है। क्योंकि वह यीशु में जीवित है और यीशु उसमें जीवित है। चेले में आने वाले मसीही जीवन और हृदय के सभी अद्‌भुत पहलू संसार में उसके मसीह के कार्य को ले जाने के द्वारा बहते हैं।

''पिता की महिमा करो''

''मेरे पिता की महिमा इसी से होगी कि तुम बहुत सा फल लाओ'' (15:8)।

''मुझ में बने रहने वाले लोग फल देकर पिता की महिमा करेंगे।'' अपने पुत्र को भेजने के परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने पर परमेश्वर को महिमा मिलती है। परन्तु यह उद्देश्य केवल तभी क्रियान्वित होता और पूरा हो सकता है जब अपने मन से और अपने जीवन में यह सोचते हुए कोई चेला यीशु में आता और उसके पीछे चलता है।

परमेश्वर की सनातन मंशा पृथ्वी के प्रत्येक जीवन में जो पिता की उस महान योजना, शुद्ध प्रेम और बहुतायत के जीवन को आगे चमकाता है। चेले के काम यीशु के हस्ताक्षर और परमेश्वर की अद्‌भुत महिमा की सुन्दर रोशनी चमकाते हुए चमकते हैं।

''मेरे सच्चे चेले बनो''

''मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे'' (15:8)।

''जो मुझ में बने रहते हैं केवल वही मेरे सच्चे चेले हैं।'' शिष्य होना सदस्यता का कार्ड या ''मैम्बरशिप'' का बिल्ला लगाने से कहीं बढ़कर है। यानी यह केवल पुष्टि करने से अधिक है। शिष्य होना एक मूल सच्चाई तक आता है। चेला होने के नाते हमें अपने आप से पूछना आवश्यक है, ''क्या मैं यीशु में बना हुआ हूं या नहीं।'' हम इस मूल्यांकन का इस्तेमाल कर सकते हैं: ''मैं उसमें, उसके द्वारा और उसके लिए जीवित हूं, यदि मैं वह फल ला रहा हूं जो केवल उसी में मिल सकता है, तभी और केवल तभी मैं यीशु का असली चेला हूं!''

''मेरे प्रेम में बने रहो''

''जैसे पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैं ने तुम से प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो। यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे: जैसे कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं'' (15:9, 10)।

''जो मुझ में स्थिर रहते हैं वे मेरे प्रेम में बने रहते हैं।'' यीशु का प्रेम हमें हमारे लिए उसके जीवन का उच्चतम स्तर और सबसे बड़ी आशिषें देने से मेल खाता है।

एक सांसारिक पिता अपने बच्चों से गहरा प्रेम करता है और हर बच्चे को बेहतर जीवन और सार्थक भविष्य देने का अवसर देने के लिए हर प्रयास करता है। जब उसके बच्चे धन्यवाद के साथ इन अवसरों से लाभ उठाते हैं और आशा के साथ उन्हें पाते हैं तो वे आत्मिकता के प्रेम में चल रहे होते हैं। यीशु में बने रहने का अर्थ उस मार्ग पर चलना है जो हमारे लिए उसके प्रेम ने बनाया है। उसमें जो उसने उसे सिखाया है बने रहकर, उस बेहतर जीवन को पकड़े रखकर और उसकी तलाश करके जो उसने उन्हें दिया है, उसके चेले बदले में उससे प्रेम करते हैं। यीशु की आज्ञाओं को मानकर, हम उससे प्रेम में बने रहते हैं, ठीक वैसे ही जैसे अपने पिता की आज्ञाओं को मानकर वह उसके प्रेम में बना रहा।

''आनन्द की भरपूरी को जान लो''

''मैं ने ये बातें तुम से इसलिए कही हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा

आनन्द पूरा हो जाए'' (15:11)।

''जो मुझ में बने रहते हैं वे आनन्द की भरपूरी को जान लेंगे।'' उस आनन्द को जो यीशु ने प्रेरितों को दिया और हमें भी देता है उसमें बने रहकर ही भरपूरी से पाया जा सकता है। यीशु न केवल इस आनन्द को देता है बल्कि वह इसके बढ़ने के लिए आवश्यक पृष्ठभूमि भी तैयार करता है। उसकी ईश्वरीय आशिषों से घिरे होने पर उसमें चलते हुए वह हमें शान्ति देता है जो उसकी सनातन प्रतिज्ञाओं से मिलती है और वह आश्वासन जो उसकी असीमित शक्ति से मिलता है। यह जानते हुए कि उसकी प्रतिज्ञाएं हमारे लिए वास्तविकताएं हैं और इस बात से सचेत कि उसकी सामर्थ हम में काम करती रहती है, हमें आनन्द के साथ आशीष मिलती है जो उसके साथ चलते हुए हमारे मार्ग को रोशन करती है।

सारांश

''मुझ में बने रहो'' की यीशु की बात पर अत्यधिक ज़ोर नहीं दिया जा सका। उसने इस पर ज़ोर दिया ताकि हमें पता चले कि यह हमारे लिए कितना आवश्यक है। इस वाक्यांश में अपने अन्दर तीन वे बातें हैं जिन्हें हमें जानने और करना आवश्यक हैं। यह कहना आसान है पर इसमें उनके लिए जो उसके पुत्र के पीछे चलने के इच्छुक हैं पिता की सनातन योजना का पूरा स्कोप है। यीशु में बने रहने से बढ़कर कोई काम नहीं हो सकता और यीशु में बने रहने से कम कुछ करना नहीं चाहिए। यह मुख्य बात उन अन्तिम शिक्षाओं में से एक है जो यीशु ने हमें दीं, और हमें चाहिए कि हम इसे कभी न भूलें।

''निदान, हे बालको, उसमें बने रहो; कि जब वह प्रगट हो, तो हमें हियाव हो, और हम उसके आने पर उसके साम्हने लज्जित न हों'' (1 यूहन्ना 2:28)।

''और जो उसकी आज्ञाओं को मानता है, वह इसमें; और यह उसमें बना रहता है: और इसी से, अर्थात उस आत्मा से जो उसने हमें दिया है, हम जानते हैं, कि वह हम में बना रहता है'' (1 यूहन्ना 3:24)।